विश्व न्याय मन्दिर

26 मार्च 2016

अब्दुल-बहा के 'आदेश' के अधीन कार्य कर रहे

विश्व के बहाईयों को,

परम प्रिय मित्रों,

आज सुबह-सुबह, आपकी ओर से, विश्व न्याय मंदिर के सदस्य, अन्तर्राष्ट्रीय शिक्षण केन्द्र के सदस्यों के साथ बाहजी स्थित निवास में मास्टर के कमरे में उस निर्णायक पल का गुणगान करने के लिये एकत्र हुए जब अब्दुल-बहा की कलम से 'दिव्य योजना की पातियों' की पहली पाती प्रकट की गई थी। अतीत की उन शानदार उपलब्धियों के लिये धन्यवाद-ज्ञापनस्वरूप उन गौरवशाली 'पातियों' से प्रार्थनाएँ अर्पित की गईं। आने वाले चरण में योजना के विस्तार के लिये अपेक्षित श्रम हेतु दिव्य सहायता की याचना की गई। और, आगे आने वाले चरणों की चुनौतियों में, एक के बाद एक, और अधिक विजय प्राप्त करते हुए, स्वर्णयुग के किनारों तक पहुँचने के लिए, आश्वस्त होने हेतु, स्वर्गिक सहायता की याचना की गई।

26 मार्च 1916 और 8 मार्च 1917 के बीच अब्दुल-बहा द्वारा उत्तरी अमेरिका के बहाईयों को सम्बोधित उत्कृष्ट पत्रों की यह श्रृंखला, 'दिव्य योजना', उनके पिता के धर्म के शक्तिशाली अधिकार-पत्रों में से एक को संस्थापित करती है। शोग़ी एफ़ेंदी स्पष्ट करते हैं कि उन चौदह 'पातियों' में " 'सर्वमहान नाम' की सृजनात्मक शक्ति ने उस सर्वशक्तिशाली योजना को जन्म दिया है जैसी अभी तक नहीं दी गई थी।" "हमारे पूर्वानुमान और मूल्याँकन से परे की शक्तियों द्वारा यह पे्ररित है" और "पाँच महाद्वीपों और सात समुद्रों के द्वीपों के भू-भाग में संचालन के लिये मंच का दावा करती है।" इसके अंदर "विश्व के आध्यात्मिक नवजागरण और चरम मुक्ति के बीज" निहित हैं।

'दिव्य योजना की पातियों' में अब्दुल-बहा ने न केवल वह विस्तृत परिकल्पना प्रदान की है जो बहाउल्लाह द्वारा अपने प्रियजनों को दिये गये दायित्वों को निभाने के लिये आवश्यक है, बल्कि उन आध्यात्मिक अवधारणाओं और व्यावहारिक कार्यनीतियों की रूपरेखा भी प्रस्तुत की है, जो सफलता के लिये आवश्यक हैं। प्रभुधर्म का शिक्षण देने और संदेश देने के लिये एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाने; संदेश देने के लिये स्वयं उठ खड़े होने अथवा दूसरे लोगों को प्रतिनियुक्त करने; दुनिया के सभी भागों में परिभ्रमण करने और देशों तथा अन्य भू-भागों में

प्रभुधर्म का शिक्षण पहली बार पहुँचाने, प्रत्येक देश का बड़ी सतर्कतापूर्वक नाम देते हुए; सम्बद्ध भाषाओं को सीखने और 'पावन मूल ग्रंथों' को अनुवादित कर उसे बांटने; प्रभुधर्म के शिक्षकों को प्रशिक्षण देने और ख़ासकर युवाओं को; जनसमूह को संदेश देने और, ख़ासकर, स्थानीय लोगों को; संविदा में सुदृढ़ रहने और प्रभुधर्म को संरक्षण प्रदान करने; प्रभुधर्म का बीज बोने और उसके सहज विकास की प्रक्रिया के अनुरूप उसको विकसित करने की उनकी विशेषता में, हम योजनाओं की पूरी श्रृंखला की छाप पाते हैं -- प्रत्येक दिव्य योजना के एक ख़ास चरण को प्रभुधर्म के प्रधान द्वारा आकार देते हुए -- जिसका प्रकट होना पूरे रचनात्मक काल के दौरान जारी रहेगा।

'दिव्य योजना की पातियों' की प्रारम्भिक प्रतिक्रिया अमर हो चुकी मार्था रूट, जो स्वतंत्र रूप से उठ खड़ी हुई थीं, जैसे चन्द उदात्त लोगों की ओर से ही हुई। वह शोग़ी एफ़ेंदी थे जिन्होंने विश्व के बहाईयों को धीरे- धीरे अधिकार-पत्र के महत्व को समझने में तथा उसकी आवश्यकताओं के लिए प्रणालीबद्ध तरीके से किस प्रकार अग्रसर होना, यह सीखने में सहायता की। लगभग बीस सालों तक इस योजना को प्रसुप्तावस्था में रखा गया, जिस दौरान प्रशासनिक व्यवस्था आकार ग्रहण कर रही थी, उसके बाद समुदायों को धैर्यपूर्वक मार्गदर्शन दिया जाता रहा कि किस प्रकार राष्ट्रीय योजनाओं को संचालित किया जाये, जिनमें उत्तरी अमेरिका की दो 'सात वर्षीय योजनाएँ' भी शामिल थीं, जिन्होंने दिव्य योजना के प्रथम दो चरणों को आकार दिया, जब तक अन्ततः, सन 1953 में पहली विश्वव्यापी योजना, 'दस वर्षीय अभियान' में सभी शामिल न हो गये। शोग़ी एफ़ेंदी ने उस महत्वपूर्ण दशक के आगे भी "विश्वव्यापी उद्यमों को रचनात्मक काल के भविष्य के कालखण्डों में, विश्व न्याय मंदिर द्वारा शुरू किये जाने का निर्धारण कर लिया था, जो एकता का प्रतीक बनेगा और उन राष्ट्रीय सभाओं की गतिविधियों की एकरूपता को स्थापित करेगा।" वर्तमान समय में यह दिव्य योजना सघन प्रयासों के माध्यम से, सामुदायिक जीवन के प्रतिमान को स्थापित करने के लिये जारी है, जो सम्पूर्ण धरा पर क्लस्टरों में हजार-ओ-हजार को अपने में समाविष्ट कर सकता है। पहले से अधिक गहराई के साथ प्रत्येक बहाई को समझना चाहिये कि सलाहकारों के सम्मेलन को हमारे हाल के संदेश में दिव्य योजना के आगे के चरण के प्रावधानों को बतला दिया गया है, जो वर्तमान समय की चुनौतीपूर्ण जरुरतों को समाविष्ट करता है -- जरुरतें जो तत्काल पूरी की जानी चाहिये और पावन भी हैं, जिन जरुरतों के प्रति अगर त्यागपूर्ण भाव से लगातार ध्यान दिया जायेगा तो वह "उस 'स्वर्णयुग के आगमन' को तीव्रता से ला सकता है, जिसे 'सर्वमहान शांति' की उद्घोषणा और विश्व सभ्यता के प्राकट्य को अवश्य ही प्रत्यक्ष करना है, जो उस 'शांति' का परिणाम व मुख्य उद्देश्य है।"

जब हम आपके, वर्तमान और भूतकाल के, समुदायों के सदस्यों के अद्‌भुत कर्मों पर विचार करते हैं तब यह कैसे सम्भव है कि हम अपने अदम्य प्रेम और असीम प्रशंसा के भाव को, समुचित ढंग से आप तक पहुँचा पाएँ? हमारी आँखों के सामने जो तस्वीर उभरती है वह है तृणमूल स्तर की हलचलें, एक सहज विकास, एक अबाधित अभिगमन, जो कभी मध्यम रूप से तो कभी प्रवाहपूर्ण रूप से बढ़ता है, और अन्ततः पूरे विश्व को अपने में समाविष्ट कर लेता है: ईश्वर के प्रेम से मदहोश प्रेमी अपनी व्यक्तिगत क्षमताओं को लांघते हुए, भ्रूणीय स्थिति की संस्थाएँ मानवजाति के कल्याण के लिए अपनी शक्ति के संचालन को सीखती हुई, शरणस्थल के रूप में उभरता हुआ समुदाय और स्कूल जिनमें मानव की क्षमता सम्पोषित होती हैं। हम प्रभुधर्म के समर्पित नायकों की सर्वाधिक विनम्र सेवाओं तथा उनके निरंतर प्रयत्नों, साथ ही, उसके वीरों, शूरवीरों और शहीदों की असाधारण उपलब्धियों के प्रति गहन सम्मान अर्पित करते हैं। विस्तृत महाद्वीपों में और फैले हुए द्वीपों में, उत्तर-ध्रुव प्रदेश से रेगिस्तान के विस्तार तक, पर्वत-पठार पर और नीचे समतल भू-भाग में, भीड़-भरे शहरी क्षेत्रों और नदी किनारे गाँवों में और वन-पथों पर, आप और आपके आध्यात्मिक पूर्वज 'आशीर्वादित सौन्दर्य' के संदेश को लोगों और राष्ट्रों के बीच ले गये। आपने अपने आराम और सुख-चैन को त्याग दिया और अपने घरों को छोड़कर अनजान जगहों या फिर अपने ही क्षेत्र की दूर की बस्ती में चले गये। आपने सामान्य जन के हितों के लिये अपने हितों को दरकिनार कर दिया। आपके साधन चाहे जो भी रहे हों, आपने संसाधनों के अपने हिस्से का त्यागपूर्वक योगदान दिया। आपने प्रभुधर्म की शिक्षा असंख्य लोगों को दी -- विभिन्न माहौल के समूहों को, और अपने घरों के लोगों को। आपने आत्माओं को जगाया और उनकी स्वयं की सेवा के पथ पर उनकी सहायता की, बहाई लेखों को व्यापक रूप से बांटा और शिक्षाओं के गहन अध्ययन में भाग लिया, सभी क्षेत्रों में उत्कृष्टता पाने की कोशिश की, सभी वर्गों के विभिन्न लोगों को मानवजाति के दोषों के कारणों की खोज सम्बन्धी वार्तालापों में उन्हें संलग्न किया और आर्थिक तथा सामाजिक विकास के प्रयासों की शुरुआत की। हालाँकि कभी-कभी गलतफहमियाँ और समस्याएँ भी उठ खड़ी हुईं, आपने एक-दूसरे को क्षमा-दान दिया और कंधे-से-कंधा मिलाकर कतारों में साथ-साथ आगे बढ़े। आपने प्रशासनिक व्यवस्था की रूपरेखा तैयार की और संविदा में दृढ़ रहते हुए, प्रभुधर्म पर होने वाले प्रत्येक प्रहार से इसकी सुरक्षा की। अपने 'प्रियतम' से प्रेम के कारण आपने हर प्रकार के पूर्वाग्रह और उदासीनता, अभाव और एकाकीपन, अभियोजन और कारावास को सहन किया। आपने बच्चों और युवाओं की पीढ़ियों का स्वागत किया और उनकी परवरिश की, जिनके ऊपर प्रभुधर्म का स्थायित्व और मानवजाति का भविष्य निर्भर करता है, और परखे हुए अनुभवी लोगों की तरह आपने मास्टर की इस सलाह पर ध्यान दिया कि अपने जीवन की अंतिम सांस तक सेवा करो। आपने दिव्य योजना के प्रस्फुटन की कथा इसकी

पहली शताब्दी की कागज की पट्टिका पर लिखी है। परम प्रिय मित्रगण, आपके सामने, भविष्य की कोरी कागज की पट्टिका पड़ी है, जिस पर आप और आपके बाद आने वाले आध्यात्मिक वंशज दुनिया की बेहतरी के लिये, अपने त्याग और अपनी शूरवीरता के नये और चिरस्थायी कर्मों को उत्कीर्ण करेंगे।

-विश्व न्याय मंदिर